

[2023] 10 एस. सी. आर 758:2023 आई. एन. एस. सी. 630

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

ए.

शत्रुघ्न

बनाम

छत्तीसगढ़ राज्य

(2016 की आपराधिक अपील संख्या 437)

बी.

20 जुलाई, 2023

[विक्रम नाथ और अहसानउद्दीन अमानुल्लाह, जे. जे.]

दंड संहिता, 1860:धारा. 303-हत्या के बराबर दोषपूर्ण हत्या-यू/एस के तहत दोषसिद्धि।302 - सही-मृतक के मुखबिर-चाचा द्वारा अपीलार्थी के खिलाफ एफ़. आई. आर.-यह आरोप कि मृतक ने चिल्लाया था कि अपीलार्थी ने उसके साथ तबल से हमला किया था-सूचना देने वाला घटना स्थल पर पहुंचा और अपने भतीजे को गर्दन पर गहरे घाव के साथ पड़ा देखा-भतीजे ने बाद में दम तोड़ दिया-अपीलार्थी यू/एस की दोषसिद्धि।302 और अवर न्यायालयों द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई-अपील पर, अभिनिर्धारित किया गया:अभियोजन पक्ष आरोप अपास्त करना करने में विफल रहा-अभियोजन पक्ष की कहानी एक संभावित कहानी प्रतीत नहीं होती है-सहायक साक्ष्य विश्वास को प्रेरित नहीं करते हैं, बल्कि भौतिक विरोधाभास हैं-सूचना देने वाले की गवाही विश्वसनीय नहीं पाई गई, इस प्रकार दोषसिद्धि का आधार नहीं बन सका-चिकित्सा साक्ष्य भी अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं करता है क्योंकि हमले के हथियार से मृतक को चोट नहीं लग सकती थी-इसके अलावा, इस बात का कोई उद्देश्य नहीं है कि अपीलार्थी मृतक की हत्या क्यों करेगा-बचाव पक्ष का संस्करण कि मृतक शराब के प्रभाव में था और पोस्टमॉर्टम में रिपोर्ट की गई पूर्व-शव परीक्षण चोट के परिणामस्वरूप एक तेज वस्तु पर गिर सकता था और गिर सकता था, और रिकॉर्ड से स्पष्ट रूप से स्पष्ट होता है-इस प्रकार, अपीलार्थी की दोषसिद्धि और सजा -

सी.

डी.

ई.

एफ.

अपील को अनुमति देते हुए, न्यायालय ने

यह अभिनिर्धारित किया कि **-1.1** किसी भी चश्मदीद ने वास्तव में अपीलार्थी द्वारा मृतक पर हमला करने की घटना को नहीं देखा था।[पैरा **31**] [770-एफ]

जी.

1.2 मुखबिर के अनुसार, वह मृतक की मदद के लिए चिल्लाने की आवाज़ सुनकर अपनी पत्नी के साथ घटनास्थल पर पहुंचने वाला पहला व्यक्ति था कि अपीलार्थी उस पर तबल से हमला कर रहा था।जब वह घटनास्थल पर पहुंचा तो उसने देखा कि मृतक था

एच.

758 ए.

759

शत्रुघन बनाम छत्तीसगढ़ राज्य ए

सड़क पर पड़ा हुआ था और अपीलार्थी तबल के साथ साइकिल पर अपने घर की ओर बढ़ रहा था।यह एफ़. आई. आर. संस्करण है।अपने अभिसाक्ष्य में मुखबिर ने कहा कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचा तो उसने आरोपी को भागते हुए देखा और तबल वहाँ पड़ा हुआ था। मृतक बेहोश हो गया था और उसकी गर्दन पर गहरा घाव था और चोट से खून बह रहा था। उसके फोन पर, अन्य पड़ोसी और उसकी बेटी सभी अपने घरों से बाहर आ गए।पीडब्लू-**14** ने कहा कि पीडब्लू-**1** ने उन्हें केवल यह सूचित किया कि मृतक पर हमला किया गया था और उसे अस्पताल ले जाया गया था।पीडब्लू-**1** ने पीडब्लू-**14** को सूचित नहीं किया कि यह अपीलार्थी था जिसने हमला किया था।पीडब्लू-**14** ने कहा कि बाद में अन्य लोगों ने अपीलार्थी द्वारा मृतक पर हमला करने के बारे में सूचित किया।अन्य चश्मदीद गवाहों ने यह नहीं बताया कि उन्होंने अपीलार्थी को मृतक पर हमला करते हुए देखा था।पीडब्लू-**2** पीडब्लू-**1** की पत्नी है, पीडब्लू-**3** मृतक की विधवा है, पीडब्लू-**4** पीडब्लू-**1** की बेटी है, अन्य गवाह हैं जो घटना स्थल पर पहुंचे थे।उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि उन्होंने अपीलार्थी को मृतक पर हमला करते देखा था।इस प्रकार, एकमात्र सबूत पीडब्लू-**1** का है जिसमें कहा गया है कि जब अपीलार्थी वहाँ पहुँचा तो वह घटना स्थल से भाग रहा था।उन्होंने स्वयं कहा कि मृतक पहले से ही बेहोश था क्योंकि वह बोलने की स्थिति में नहीं था।एक और पहलू है जिस पर विचार किया जाना चाहिए कि क्या मृतक द्वारा दिया गया रोया जैसा कहा गया है वैसा किया जा सकता था।आम तौर पर गाँवों में कोई भी बुजुर्गों और विशेष रूप से उनके चाचाओं का नाम नहीं लेता है।अभि. साक्षी **1** मृतक का चाचा (पिता का भाई) होता है।सामान्य तौर पर मृतक ने केवल काका को फोन किया होगा और उसका नाम नहीं लिया होगा।प्रथम सूचना रिपोर्ट में

कहा गया है कि जब अभि. साक्षी **1** बाहर आया तो उसने अपीलार्थी को तबल के साथ साइकिल पर अपने घर की ओर भागते देखा, लेकिन निचली विचारण न्यायालय के समक्ष अभिसाक्ष्य में कहा गया है कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचा तो अपीलार्थी भाग रहा था और तबल वहां पड़ा हुआ था और फिर उसने कहा कि मृतक ने केवल चिल्लाया था कि अपीलार्थी उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहा है। एक अन्य पहलू जिस पर विचार किया जाना चाहिए वह यह है कि क्या उक्त चोट लगने के बाद मृतक चिल्ला सकता था और अगर उसने हमला करने से पहले चिल्लाया होता तो स्थिति अलग होती। यह एक-से-एक होता और वह हमले का विरोध कर सकता था। तथ्य यह है कि गर्दन पर केवल एक चोट है। [पैरा **32**] [770-जी; 771-ए-एच; 772-ए-बी]

बी.

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

760 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

1.3 अभियोजन पक्ष की कहानी, जैसा कि निर्धारित की गई है, एक संभावित कहानी प्रतीत नहीं होती है और तथ्य के गवाहों के मुकदमे के दौरान दिए गए सहायक साक्ष्य भी विश्वास को प्रेरित नहीं करते हैं। बल्कि भौतिक विरोधाभास हैं। [पैरा **33**] [772-सी-डी]

1.4 बचाव पक्ष अभियोजन मामले में गंभीर सेंध लगाने में सफल रहा है। पहला बिंदु यह है कि अभियोजन पक्ष द्वारा कोई उद्देश्य स्थापित नहीं किया गया है कि अपीलार्थी मृतक पर हमला क्यों करेगा। तथ्य के सभी गवाह जो परिवार के सदस्य हैं, ने कहा कि अपीलार्थी और मृतक के बीच कोई दुश्मनी नहीं थी। एक बार जब घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं होता है, तो अभियोजन पक्ष को अपराध करने के लिए एक उद्देश्य स्थापित करना होगा क्योंकि प्रत्यक्ष साक्ष्य के मामले में, उद्देश्य की एक प्रमुख भूमिका नहीं हो सकती है। यदि कोई मकसद तय नहीं किया गया है या साबित नहीं किया गया है और प्रत्यक्ष चश्मदीद गवाह हैं, तो मकसद अपना महत्व खो सकता है, लेकिन तत्काल मामले में क्योंकि किसी ने भी घटना को नहीं देखा है, मकसद की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। जिरह के दौरान बचाव पक्ष से पता चला कि सरपंच ने अपीलार्थी के खिलाफ इस कारण शिकायत की थी कि अपीलार्थी ने सरकारी धन के दुरुपयोग और आवश्यक वस्तुओं के वितरण में बड़ी अवैधता के बारे में भी शिकायत की थी।

उक्त शिकायत पर एक जांच की गई जिसमें सरपंच अभि. साक्षी **11** को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी। बचाव पक्ष ने यह भी सुझाव दिया कि मृतक को अस्पताल ले जाने के बाद रात में ही, सरपंच द्वारा एक बैठक बुलाई गई थी जहाँ अपीलार्थी को स्वीकार करने के लिए मजबूर किया गया था। उक्त बैठक को पीडब्लू-5 द्वारा स्वीकार किया गया है। यह सुझाव दिया गया था कि बैठक में अपीलार्थी ने कहा था कि उसने मृतक को फिसलते हुए और नुकीली वस्तु पर गिरते हुए देखा था जिसके परिणामस्वरूप चोट लगी थी जो घातक साबित हुई थी। यह संभव है कि सरपंच के प्रभाव के कारण अपीलार्थी को गलत तरीके से फंसाया गया हो। बचाव पक्ष ने अभि. साक्षी **6** की प्रतिपरीक्षा के दौरान यह भी पता लगाया कि हमले के हथियार के आकार और चोट के आकार को देखते हुए हमले का हथियार बरामद किया गया था और उसके सामने पेश किया गया था जिससे चोट नहीं लग सकती थी। बचाव पक्ष ने यह भी सुझाव दिया कि वास्तव में मृतक बहुत नशे में था और एक तेज धार वाली वस्तु पर गिर गया था जिसके कारण उसे चोट लगी थी। यह दो कारणों से संभव प्रतीत होता है: सबसे पहले, उस अभि. साक्षी **6** में ए था

बी.

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.

761

शत्रुघन बनाम छत्तीसगढ़ राज्य ए

कहा कि मृतक के शरीर में पर्याप्त शराब थी और दूसरी बात यह कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत हमले का हथियार चोट से मेल नहीं खाता था। हो सकता है कि यह चोट मृतक के फिसलने और किसी नुकीली वस्तु पर गिरने से लगी हो। [पैरा **34**] [772-डी-एच; 773-ए-ई]

बी.

1.5 साक्ष्य और विश्लेषण के वर्णन से यह स्पष्ट है कि अभि. साक्षी **1** की गवाही विश्वसनीय नहीं थी और दोषसिद्धि का आधार नहीं बन सकती थी। जाहिरा तौर पर, वह सरपंच से प्रभावित थे, जिनकी घटना के बाद की कार्यवाही में सक्रिय भागीदारी से इनकार नहीं किया जा

सकता है।चिकित्सा साक्ष्य अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि हमले के हथियार से मृतक को चोट नहीं लग सकती थी जैसा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में देखा गया है।इस बात का कोई उद्देश्य नहीं था कि अपीलार्थी बिना किसी कारण के किसी परिचित और मित्र की हत्या क्यों करेगा।बचाव पक्ष का कहना है कि मृतक शराब के प्रभाव में था और वह किसी नुकीली वस्तु पर गिर सकता था जिसके परिणामस्वरूप पोस्टमॉर्टम में पूर्व-पोस्टमार्टम चोट की सूचना दी गई थी।रिकॉर्ड से भी यही बात स्पष्ट रूप से सामने आती है।एफ. आई. आर. दर्ज करने में देरी के लिए स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं है।[पैरा **35**] [**773-ई-एच**]

सी.

डी.

1.6 अपीलार्थी बरी होने का हकदार होगा।अपीलार्थी की दोषसिद्धि और सजा अपास्त करना कर दिया जाता है।वह सभी आरोपों से बरी हो जाता है।[पैरा **37**] [**774-ए-बी**]

ई.

आपराधिक अपील न्यायनिर्णय:2016 की आपराधिक अपील संख्या 437।

एफ.

2010 के सी. आर. एल. ए. सं. 3 में बिलासपुर में छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के दिनांक 06.04.2015 के निर्णय और आदेश से।

सुश्री अनु गुप्ता, संजय मणि त्रिपाठी, कमल कांत त्रिपाठी, सूरज कुमार सिंह, अधिवक्तागण अपीलार्थी के लिए।

जी.

सुमीर सोधी, सुश्री श्रेया सिंह, अधिवक्तागण प्रत्यर्थी के लिए।

एच.

762

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

न्यायालय का निर्णय इसके द्वारा दिया गया था

विक्रम नाथ, जे।

इस अपील के माध्यम से, अभियुक्त अपीलार्थी ने छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय की एक खंड पीठ द्वारा 2010 की आपराधिक अपील संख्या 3, जिसका शीर्षक 'स्टटुघन बनाम छत्तीसगढ़

राज्य' है, को खारिज करते हुए उच्च न्यायालय के दिनांकित 'आईडी1' के निर्णय और आदेश की शुद्धता पर हमला किया है, जिसके तहत भारतीय दंड संहिता की धारा 302 के तहत दोषसिद्धि और दूसरे अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश, बलौदा बाजार, जिला द्वारा पारित 5,000/- रुपये के जुर्माने के साथ आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। 2009 के सत्र परीक्षण No.41 में रायपुर की पुष्टि की गई है। अपीलार्थी जेल में है और पहले ही लगभग 15 साल की जेल की सजा काट चुका है।

बी.

सी.

2. अभियोजन पक्ष की कहानी के अनुसार, मृतक (जगत राम) के चाचा विजय कुमार (पीडब्लू1) ने 04 बजे प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराई: 30 20.07.2008 पर AM कि पिछली रात लगभग 08.00 बजे जब वह अपने घर में बैठे थे, तो उनके भतीजे जगत साइकिल से लौट रहे थे और उन्होंने अपने भतीजे को चिल्लाते हुए सुना, जब एक चंदू के घर के सामने से गुजर रहे थे "काका विजय सिंह भागते हैं, शत्रुघ्न ने मुझ पर तबबल से हमला किया है।" स्थानीय भाषा में दर्ज सटीक कथन है: "

डी.

काका विजय

''

3. मदद के लिए उक्त पुकार सुनकर, मुखबिर अपनी पत्नी के साथ चंदूलाल के घर के सामने की गली में भागा और देखा कि उसका भतीजा जगत सड़क पर पड़ा हुआ है और शत्रुघ्न तबबल के साथ अपनी साइकिल पर अपने घर की ओर बढ़ रहा है। उसके भतीजे ने उसे बताया कि शत्रुघ्न ने उसकी हत्या करने के लिए उसकी गर्दन पर तबल से हमला किया था और उसके बाद भाग गया था। उसके भतीजे का खून बह रहा था। एक बड़ी आवाज़ में, उन्होंने अपने भतीजे को बचाने के लिए मदद मांगी, जिस पर शत्रुघ्न ने हमला किया था। उसकी कॉल पर, उसकी बेटी और पड़ोस के अन्य निवासी इकट्ठा हो गए। मृतक के पिता अजीत राम घायलों को चिकित्सा सहायता के लिए सीताराम की मोटर साइकिल पर ले गए। कुछ समय बाद, वह वापस आया और बताया कि जगत की मृत्यु हो गई है। उक्त शिकायत 2008 की एफ. आई. आर. No.215 के रूप में पुलिस स्टेशन कासडोल, जिला रायपुर में दर्ज की गई थी। जाँच अधिकारी 2 (पीडब्लू-16) को जाँच का काम सौंपा गया, जिन्होंने घटनास्थल का दौरा किया, जाँच तैयार की, मुखबिरों के साथ-साथ गवाहों के बयान दर्ज किए, अपीलार्थी को गिरफ्तार किया और विभिन्न प्रकार के साक्ष्य बरामद किए।

ई.

एफ.

जी.

1 आईपीसी 2 आईओ ए

एच.

763

शत्रुघन बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

हमले के हथियार, खून के दाग वाले अन्य कपड़ों सहित सामान और साइकिल भी बरामद की गई। पोस्टमार्टम 20.07.2008 पर ही 02.00 शाम को किया गया था। निम्नलिखित पूर्व-शव परीक्षण चोटें देखी गईं:

- गर्दन के बाईं ओर गहरा नुकीला घाव जिसकी लंबाई 5 सेमी, चौड़ाई 3 सेमी और गहराई 3 सेमी है।

बी.

- संबद्ध रक्त वाहिकाओं को भी काट दिया गया और भारी रक्तस्राव हुआ।

4. जाँच पूरी करने के बाद आई. पी. सी. की धारा 307 के तहत आरोप पत्र प्रस्तुत किया गया। यह मामला सत्र न्यायालय को सौंपा गया था। ट्रायल जज ने 20.07.2008 पर आरोप तय किया जिसे अपीलार्थी ने अस्वीकार कर दिया और मुकदमा चलाने का दावा किया। अभियोजन पक्ष ने 16 गवाहों से पूछताछ की और 21 दस्तावेज पेश किए। बचाव पक्ष ने किसी भी गवाह से पूछताछ नहीं की और न ही उसने कोई दस्तावेजी सबूत पेश किया।

सी.

5. विचारण न्यायालय, अभिलेख पर सामग्री पर विचार करने के बाद, इस निष्कर्ष पर पहुंची कि अभियोजन पक्ष ने उचित संदेह से परे साबित कर दिया था कि यह अपीलार्थी ही था जिसने अपराध किया था और तदनुसार उसे आई. पी. सी. की धारा 302 के तहत गैर इरादतन हत्या के लिए दोषी ठहराया और उसे 5,000 रुपये के जुर्माने के साथ आजीवन कारावास की सजा सुनाई। उक्त दोषसिद्धि की पुष्टि उच्च न्यायालय द्वारा की गई है। इसलिए यह अपील की गई है।

डी.

ई.

6. हमने पक्षों के विद्वान अधिवक्ता को सुना है और मूल रिकॉर्ड का भी अध्ययन किया है।

7. अपीलार्थी की विद्वान अधिवक्ता सुश्री अनु गुप्ता के अनुसार, दोनों न्यायालयों ने दोषसिद्धि दर्ज करके कानून की गंभीर त्रुटि की। उन्होंने अस्वीकार्य साक्ष्य पर भरोसा किया और साथ ही प्रासंगिक स्वीकार्य साक्ष्य को नजरअंदाज कर दिया। तथ्य के गवाह सुसंगत नहीं थे और विश्वास

को प्रेरित नहीं करते थे।चिकित्सा साक्ष्य अभियोजन पक्ष की कहानी का समर्थन नहीं करते थे। अपराध करने का कोई सीधा सबूत नहीं था।यह मामला परिस्थितिजन्य और सुनी-सुनाई बातों पर आधारित था।अभियोजन पक्ष द्वारा प्रथम सूचना रिपोर्ट या जांच के दौरान दर्ज किए गए बयानों या यहां तक कि मुकदमे के दौरान दिए गए साक्ष्य में भी कोई उद्देश्य स्थापित नहीं किया गया था।यह प्रतिपरीक्षा में सामने आए विभिन्न कारकों के कारण गलत निहितार्थ का मामला था। विद्वान अधिवक्ता हमें प्रासंगिक साक्ष्य तक ले गए हैं जिन पर जल्द ही चर्चा की जाएगी।इस प्रकार यह प्रस्तुत किया गया कि अपीलार्थी बरी होने का हकदार है।

एफ.

जी.

एच.

764

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

8. दूसरी ओर, छत्तीसगढ़ राज्य के विद्वान अधिवक्ता श्री सुमीर सोधी ने कहा कि अभियोजन पक्ष ने ठोस सामग्री द्वारा अपराध को पूरी तरह से साबित कर दिया है।जिरह के अवसर का लाभ उठाने के बावजूद बचाव पक्ष अभियोजन पक्ष के गवाहों के साक्ष्य को बाधित या हिला नहीं सका। नीचे दिए गए दोनों न्यायालयों द्वारा दर्ज समवर्ती निष्कर्षों में हस्तक्षेप करने का कोई कारण या औचित्य नहीं है।श्री सोधी ने हमें साक्ष्य के प्रासंगिक भाग में भी ले जाया है ताकि अपीलार्थी के विद्वान अधिवक्ता द्वारा हमें दिखाए गए तर्कों और साक्ष्य को बदनाम किया जा सके।इस प्रकार उन्होंने प्रस्तुत किया कि अपील खारिज होने योग्य है।

बी.

9. पीडब्लू-1 मृतक का मुखबिर और चाचा होता है।वह अपराध स्थल पर पहुंचने वाला पहला व्यक्ति होने का दावा करता है।उसकी गवाही पर चर्चा करने से पहले, सूचना अधिकारी द्वारा उस स्थान और दूरी को दिखाने के लिए तैयार की गई साइट योजना पर टिप्पणी करना उचित होगा जहां घटना हुई थी और सूचना देने वाले का घर।स्थल योजना में, हमले की जगह को "ए" वर्णमाला के साथ दिखाया गया है जो चंदू के घर के सामने है।गली के दूसरी तरफ, चंदू के घर से थोड़ी दूर और तिरछे विजय कुमार का घर है, सूचना देने वाला (पीडब्लू-1) जिसे वर्णमाला "सी" द्वारा चिह्नित किया गया है।पीडब्लू-1 के घर से कुछ दूर मृतक जगत का घर वर्णमाला "बी" से चिह्नित है।वर्णमाला 'डी' को उस स्थान को इंगित करने के लिए चिह्नित किया गया है जहाँ मृतक का चक्र पड़ा था।"ए" से "सी" के बीच की दूरी को 14.80 मीटर (48.56 फीट),

"ए" और "बी" के बीच की दूरी को 250 मीटर (820.21 फीट) और "ए" से "डी" के बीच की दूरी को 13.30 मीटर (43.64 फीट) दिखाया गया है।

सी.

डी.

ई.

10. उपरोक्त तस्वीर को ध्यान में रखते हुए, जैसा कि स्थल योजना द्वारा दर्शाया गया है, तथ्य के गवाहों के साक्ष्य पर चर्चा की जा रही है। यह ध्यान रखना प्रासंगिक होगा कि दर्ज किए गए साक्ष्य निकटता में हैं और घटना की तारीख से उचित समय के भीतर (11.02.2009 पर कुछ महीनों के भीतर) हैं। इस प्रकार तथ्य अभी भी गवाहों के दिमाग में ताजा होंगे।

एफ.

11. पीडब्लू-1 में कहा गया है कि यह घटना लगभग 4 महीने पहले लगभग 1 बजे हुई थी जब जगत चिल्लाया था कि शत्रुघ्न ने उस पर हमला किया है। वह घटना स्थल पर पहुंचा और आरोपी को भागते हुए देखा और तबल वहाँ पड़ा हुआ था। मृतक उस समय तक बेहोश हो चुका था और उसकी गर्दन पर गहरा घाव था जिससे खून बह रहा था। उनके फोन पर चंदू, फिरतू, अक्षय और उनकी बेटी सभी दौड़ते हुए आ गए थे। यह घटना वास्तव में ए के सामने हुई थी।

जी.

एच.

765

शत्रुघ्न बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

चंदू और अक्षय का घर। मृतक को डॉ. साहू के पास ले जाया गया, जिन्होंने उसे मृत घोषित कर दिया और फिर वह रिपोर्ट दर्ज कराने गए।

पुलिस स्टेशन। वह यह भी कहता है कि वह नहीं जानता कि क्यों

अपीलार्थी ने अपने भतीजे पर हमला किया। इसके बाद वह प्रथम सूचना रिपोर्ट (उदा. पी1)। वह मर्ग रिपोर्ट पर अपने हस्ताक्षर को भी स्वीकार करता है (उदा. पी2)।

बी.

12. अपनी जिरह में, पीडब्लू-1 स्वीकार करता है कि चंदू के घर के बाद एक राम सिंह का घर है और राम सिंह के घर के बाद उसका घर है। वह आगे स्वीकार करता है कि उसके भाई अजीत राम के घर यानी मृतक के घर में कुछ मेहमान थे। वह.

इस तथ्य से इनकार नहीं करता है कि उसके भाई के घर पर मेहमानों को भोजन के साथ शराब परोसी गई थी और वह इस बात से इनकार नहीं करता है कि शायद मृतक ने भी अपने मेहमानों के साथ शराब का सेवन किया था।

सी.

जिरह के पैराग्राफ 9 में वह कहता है कि अक्षय और फिरतू उसके बुलाने पर मौके पर आए थे। चंदू वहाँ नहीं था, क्योंकि वह बाहर गया था और वह स्वीकार करता है कि चंदू मौके पर नहीं आया था।

कॉल करें। वह इस बात से इनकार करता है कि वह फिरतू के बुलाने पर आया था। वह स्वीकार करता है कि मृतक उस समय बात नहीं कर रहा था जब वह वहाँ आया था क्योंकि वह पहले से ही बेहोश था। इसके बाद वह स्वीकार करता है कि अपीलार्थी ने एक राजेंद्र के साथ मिलकर, पंच खेमराज और एक मुन्नू लाल की पत्नी के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी। वह स्वीकार करता है कि उसका अपीलार्थी के साथ कोई विवाद नहीं था और न ही मृतक का उसके साथ कोई विवाद था। फिर,

डी.

ई.

उनका अपना कहना है कि उन्हें नहीं पता था कि मृतक और अपीलार्थी के बीच कोई विवाद था या नहीं। वह इस सुझाव से इनकार करता है कि उसने वास्तव में अपीलार्थी को मौके से भागते नहीं देखा था क्योंकि यह एक था

अंधेरी रात। फिर वह स्वीकार करता है कि उसके साथ सरपंच भी गया था।

पुलिस स्टेशन तक। फिर वह पुलिस स्टेशन पहुंचने में देरी के बारे में बताता है, क्योंकि उसके अनुसार, वह पहले बाया चौकी गया और फिर वहाँ से कासडोल पुलिस स्टेशन गया। वह इस सुझाव से इनकार करता है कि उसने वास्तव में अपीलार्थी को नहीं देखा था और उसे गलत तरीके से फंसाया था। 13. पीडब्लू-2 सुखनंतिन बाई हैं। वह पीडब्लू-1 विजय कुमार की पत्नी हैं। वह बताती है कि उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन लगभग 07.30PM पर जब वह अपने घर पर थी, तो उसने अपने भतीजे जगत की आवाज़ सुनी कि शत्रुघ्न ने उस पर हमला किया है। उक्त चिल्लाहट सुनकर, उनके पति विजय कुमार बाहर चले गए और उसके बाद उन्होंने उनका पीछा किया। जब वह उस स्थान पर पहुंची

एफ.

जी.

घटना के समय, उसका भतीजा गली में पड़ा हुआ था और अपीलार्थी वहाँ नहीं था। वह अपनी प्रतिपरीक्षा में कहती है कि एक

एच.

766 सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट [2023] 10 एस. सी. आर.

सरपंच के खिलाफ शिकायत। वह यह भी स्वीकार करती है कि मृतक और अपीलार्थी के बीच कोई विवाद नहीं था। वह यह भी मानती है कि उसके भतीजे ने पंच के खिलाफ उस शिकायत में शत्रुघ्न और राजेंद्र की मदद की थी, जिसके परिणामस्वरूप पंच को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी थी।

बी.

14. पीडब्लू-3 मृतक की विधवा किरांतिन बाई हैं। वह केवल यह बताती है कि उसके पति की हत्या लगभग 5-6 महीने पहले की गई थी। उसकी सास ने उसे सूचित किया कि अपीलार्थी ने उसके पति पर हमला किया था।

तबबल। वह यह भी बताती है कि मृतक बात करने की स्थिति में नहीं था जब उसने उसे गली में पड़ा देखा और उसके बाद, वह था

रिश्तेदारों द्वारा ले जाया गया। इस गवाह से कोई जिरह नहीं की गई है।

सी.

15. पीडब्लू-4 यशोदा कुमारी है, जो पीडब्लू-1, विजय कुमार की बेटी है। उसने कहा कि उसने केवल मृतक को चिल्लाते हुए सुना कि शत्रुघ्न ने हमला किया था। यह सुनकर पहले उसके पिता बाहर गए, फिर उसकी माँ बाहर गई और फिर वह बाहर आई और देखा कि मृतक की गर्दन पर चोट लगी है। जिरह में, वह स्वीकार करती है

डी.

कि मृतक और अपीलार्थी के बीच कोई शत्रुता नहीं थी।

वह यह भी मानती है कि उसका घर चंदू के घर के सामने से लगभग दो घरों की दूरी पर गली के पार है। वह स्वीकार करती है कि कोई नहीं था

जिस समय वह बाहर आई थी उस समय रोशनी थी और अंधेरा था। वह इस सुझाव को भी स्वीकार करती है कि फिरतू राम का घर चंदूलाल के घर के सबसे करीब है और उसका घर थोड़ा दूर है। वह यह भी कहती है कि जब वह बाहर आई तो उस समय कोई और नहीं था और उसने अपीलार्थी को नहीं देखा था।

ई.

16. पीडब्लू-5 चेतन लाल के बेटे लखन कुमार हैं। वह जाँच और हमले के हथियार की बरामदगी और अपीलार्थी के चक्र का भी गवाह है। उन्होंने वसूली ज्ञापन एक्स-पी3, एक्स-पी4,

एक्स-पी5, एक्स-पी6 और एक्स-पी7 को साबित किया है।मृतक की साइकिल भी बरामद की गई और उसके द्वारा रिकवरी मेमो एक्स-पी8 पर भी हस्ताक्षर किए गए।एक्स-पी9 के माध्यम से कपड़ों की बरामदगी पर भी उनके द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे और एक्स-पी10 के माध्यम से सादे मिट्टी और खून से सने मिट्टी की बरामदगी पर भी उनके द्वारा हस्ताक्षर किए गए थे।वह साइट प्लान एक्स-पी11 और अपीलार्थी एक्स-पी12 के गिरफ्तारी ज्ञापन का भी हस्ताक्षरकर्ता है।अपनी जिरह में वह कहता है कि वह मृतक का भाई है।जिरह के पैराग्राफ 9 में, वह कहता है कि

एफ.

जी.

गाँव वालों की बैठक रात में गाँव में हुई।फिर वह इस सुझाव से इनकार करता है कि उस बैठक में अपीलार्थी ने ए से इनकार किया था।

एच.

767

शत्रुघन बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

मृतक पर हमला किया और इसके बजाय कहा था कि मृतक

गिर कर गिर गया था।वह इस तथ्य से भी इनकार करता है कि अपीलार्थी ने दीपक और नरोत्तम से भी यही बात कही थी।पैराग्राफ **10** में, वह

यह स्वीकार करता है कि बैठक में सरपंच वहाँ था और वह यह भी स्वीकार करता है कि उक्त बैठक में, अपीलार्थी ने कहा था कि जब वह गुजर रहा था, तो उसने देखा कि मृतक 'फरसा' पर गिर गया था।

बी.

वह यह भी कहता है कि उसे पता नहीं था कि पूछताछ किस समय हुई थी और वह यह भी कहता है कि वसूली ज्ञापन और पूछताछ की सामग्री उसे नहीं पढ़ी गई थी।

17. पीडब्लू-6 डॉ. सुनील सिंह हैं जिन्होंने मृतक के शव का पोस्टमार्टम 20.07.2008 पर 02.00 बजे किया था। उन्होंने पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट Ex.-P13 को साबित कर दिया है।अपने जाँच-इन-चीफ में, वह कहता है कि 20.07.2008 पर, तबल को उसके पास निरीक्षण के लिए भेजा गया था।उन्होंने अपनी रिपोर्ट में इसकी लंबाई और चौड़ाई का उल्लेख किया है और कहा है कि उक्त हथियार से मृतक को चोट लग सकती है और उन्होंने सलाह दी थी कि तबल को रासायनिक जांच के लिए भेजा जाए।यह रिपोर्ट उन्होंने साबित की थी और इसे Ex.-P14 के रूप में चिह्नित किया गया है।

सी.

डी.

18. वह आगे कहता है कि **21.07.2008** पर, उसने जाँच की थी

अपीलार्थी और उसके दाहिने पैर पर कुछ खरोंच देखी थी

जिसे उन्होंने एक चोट रिपोर्ट तैयार की थी जिसे उन्होंने साबित किया और Ex.-P15 के रूप में चिह्नित किया। उन्होंने यह भी कहा कि 20.07.2008 पर मृतक के शरीर पर कपड़ों पर खून के धब्बे थे और उन्होंने सलाह दी थी कि उन्हें रासायनिक जांच के लिए भेजा जाए। इस रिपोर्ट को उन्होंने साबित भी किया और Ex.-P16 के रूप में चिह्नित किया।

ई.

19. अपनी प्रतिपरीक्षा में, वह कहता है कि

तबबल (धातु का हिस्सा) **13.5** सेमी था। उन्होंने आगे कहा कि मृतक पर चोट की लंबाई **5** सेमी थी। उन्होंने आगे कहा कि यह

एफ.

यदि उक्त हथियार का उपयोग हमले के लिए किया जाता है, तो चोट की लंबाई भी 13.5 सेमी होती। वह यह भी कहता है कि यह सही है

कि बरामद हथियार से मृतक की गर्दन पर चोट नहीं लग सकती थी। वह फिर से स्वीकार करता है कि कपड़े

अपीलार्थी से जिन धब्बों को जब्त किया गया था, उनमें खून जैसे कुछ धब्बे थे, लेकिन उन्हें यकीन नहीं था कि यह मानव रक्त था या नहीं। वह यह भी स्वीकार करता है कि

जी.

मृतक के पेट में पर्याप्त मात्रा में शराब पाई गई और शराब को शरीर से बाहर निकलने में लगभग **18** घंटे लगते हैं। उनका यह भी कहना है कि यह संभव है कि मृतक को दुर्घटना में चोट लगी हो।

एच.

768

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

20. पीडब्लू-7 पूछताछ और स्थल योजना और वसूली का भी गवाह है, उसके बयान पर कुछ भी नहीं बदलता है। उन्होंने वसूली और पूछताछ के लिए दूसरे गवाह के समान बयान दिया है।

21. पीडब्लू-8 मृतक के पिता अजीत राम हैं। वह बताता है कि जब वह कुछ खरीदारी करने के बाद लगभग 1 बजे घर पहुंचा, तो उसके भाई विजय कुमार (पीडब्लू-1) ने बताया कि उसके बेटे जगत ने चिल्लाया था कि अपीलार्थी ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था। उसने पुलिस के कुछ कागजात साबित किए हैं। वह स्वीकार करता है कि उस दिन उसके घर पर मेहमान थे। वह यह भी कहता है कि मृतक भी उसके साथ रहता था। वह स्वीकार करता है कि

बी.

शराब का सेवन करता है लेकिन जहां तक उसके बेटे जगत का सवाल है, वह कहता है कि उसे नहीं पता कि वह शराब का सेवन करता था या नहीं। वह यह भी स्वीकार करता है कि मृतक के बीच कोई दुश्मनी नहीं थी

सी.

और अपीलार्थी। हालाँकि, उनका दावा है कि उन्हें अपीलार्थी द्वारा अपीलार्थी का समर्थन करने वाले सरपंच और उनके बेटे जगत के खिलाफ की जा रही शिकायत के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। उन्होंने इस सुझाव का खंडन किया है कि उन्होंने

मुकदमे के दौरान अपीलार्थी का नाम गलत तरीके से ले रहा था क्योंकि इससे पहले उसने जाँच के दौरान कभी उसका नाम नहीं लिया था।

डी.

22. पीडब्लू-9 फिरतू है, जो चंदूलाल का पड़ोसी है। वह कहता है कि जब वह शाम को लगभग 7 से 8 बजे खाना खाने वाला था, तो उसने बाहर से कुछ शोर सुना और फिर एक और कॉल आया कि जगत की हत्या कर दी गई है और अपीलार्थी ने उसकी हत्या कर दी है, फिर वह बाहर आ गया। जगत गर्दन पर चोट के साथ गली में लेटा हुआ था और विजय कुमार ने उसे बताया कि अपीलार्थी ने यह अपराध किया है। वह स्वीकार करता है कि

ई.

जगत, मृतक ने उसे कुछ नहीं बताया। वह यह भी कहता है कि

अक्षय और मन्नू जैसे अन्य लोग भी आए थे। जगत, मृतक बेहोश था और उसे अस्पताल ले जाया गया लेकिन रास्ते में ही उसकी मौत हो गई। उनका कहना है कि अपीलार्थी शत्रुघ्न ने अपने घर से गुजरते हुए उन्हें फोन किया था और उसके बाद उन्होंने जगत की आवाज सुनी थी। वह भी।

एफ.

यह बताता है कि अपीलार्थी ने अपनी साइकिल पर अपना घर पार करते समय उसे बुलाया था और उससे पूछा था कि वह क्या पका रहा है। तब उन्होंने

यह बताता है कि पीडब्लू-1 विजय कुमार ने उसे बताया है कि यह अपीलार्थी था जिसने हमला किया था और उसने आईओ को इस बारे में बताया था, लेकिन उसने धारा 161 के तहत बयान में उल्लेख नहीं किया है जिसके लिए वह नहीं बता सकता है

जी.

कारण। वह आगे कहता है कि उसने कभी जगत को चिल्लाते नहीं सुना और न ही उसने अपीलार्थी को देखा था। विजय कुमार के बुलाने पर ही वह बाहर आए थे।

23. पीडब्लू-10 सीपत बाई हैं, जो फिरतू की पत्नी हैं। वह केवल यह बताती है कि रात में उसने लोगों को भागते हुए चिल्लाते हुए सुना। जब वह बाहर आई तो उसके पति ए

एच.

769

शत्रुघ्न बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

वह पहले से ही बाहर थी और फिर उसे बताया गया कि अपीलार्थी ने मृतक पर हमला किया था।

24. पीडब्लू-11 खेमराज सिंह हैं। वे गाँव के सरपंच हैं। वह.

बताता है कि वह पी. डब्ल्यू.-1 के साथ चौकी तक गया था और फिर

पुलिस स्टेशन। फिर वह इस सुझाव से इनकार करता है कि अपीलार्थी ने उसके और अन्य लोगों के खिलाफ धन के दुरुपयोग के संबंध में शिकायत की थी। उन्होंने इस बात से भी इनकार किया कि मृतक जगत ने शिकायत में शत्रुघ्न और राजेंद्र का समर्थन किया था। हालांकि, उन्होंने

बी.

यह स्वीकार करता है कि शिकायत पर परियोजना अधिकारी और अन्य लोगों ने

पूछताछ के लिए आए। शिकायत और जांच से संबंधित अन्य सुझावों को उनके द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता है।

सी.

25. पीडब्लू-12 में से एक अक्षय कुमार हैं। वह बताता है कि रात में घटना की तारीख को उसने बहुत शोर और हंगामा सुना और लोग भागते हुए चिल्लाने लगे, जिस पर वह घर से बाहर आ गया। उन्होंने पीडब्लू-1, अपनी पत्नी और अपनी बेटी को देखा। उस समय, पीडब्लू-1 ने उन्हें बताया कि अपीलार्थी ने मृतक पर तबल से हमला किया था। वह जिरह में आगे कहता है कि जब

वह बाहर आया तो फिरतू राम, सरपंच और अन्य लोग वहाँ नहीं आए थे और उसने अपीलार्थी को उस स्थान पर नहीं देखा था।

डी.

वह कहता है कि वह जानता है कि दोनों के बीच कोई दुश्मनी नहीं थी।

अपीलार्थी और मृतक। वह मुखबिर पीडब्लू-1 का पड़ोसी है।

ई.

26. पीडब्लू-13 चंदू है। वह कहता है कि जगत की हत्या गली में उसके घर के सामने हुई थी और उसने सुना था कि अपीलार्थी ने उसके साथ दुर्व्यवहार किया था।

27. पीडब्लू-14 करण सिंह है जो बताता है कि लगभग 07.00 शाम को 19.07.2008 पर वह कपड़े बदल रहा था क्योंकि वह काम से लौटते समय गीला हो गया था। विजय कुमार उनके घर आए और उन्हें बताया कि जगत नीचे गिर गया है और जगत को इलाज के लिए ले जाया गया है। इसके बाद लखन और लक्ष्मण ने उसे बताया कि यह अपीलार्थी ही था जिसने मृतक पर हमला किया था। वह मृतक के परिवार को शव सौंपने के लिए तैयार किए गए ज्ञापन (एक्स-पी 18) का गवाह है। जिरह में वह कहता है कि उसने सुना था कि सरपंच खेमराज घायलों के साथ अस्पताल गए थे। इसके अलावा वह विजय कुमार (पीडब्लू-1) और सरपंच खेमराज के साथ पुलिस स्टेशन भी गया था। वह आगे कहता है कि वे सुबह 06.00 पर पुलिस स्टेशन पहुंचे, हालाँकि पुलिस सुबह 04.00 पर गाँव में पहुँच गई थी। एफ़. आई. आर. सुबह 07.00 पर दर्ज की गई और वे शाम को 04.00 बजे गाँव लौट आए।

एफ़.

जी.

एच.

770

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

28. पीडब्लू-15 अभिराम साहू हैं। उन्होंने स्थल योजना तैयार की थी और इसे साबित किया था, जिसे Ex.-P19 के रूप में चिह्नित किया गया था।

29. पीडब्लू-16, दीनू राम मांडवी, निरीक्षक जाँच अधिकारी हैं। उन्होंने 2008 की विलय No.82 के रूप में पंजीकृत 20.07.2008 की विलय रिपोर्ट के बारे में कहा है जिसे उन्होंने पूर्व-पी2 के रूप में साबित किया है। वह आगे एफ़. आई. आर. को Ex.-P1, साइट योजना,

जाँच, और इसकी सूचना को एक्स-पी3 और एक्स-पी4 के रूप में साबित करता है। इसके अलावा, वह साबित करता है कि एक्स-पी 13 पोस्टमॉर्टम के लिए अनुरोध है और तबल (एक्स-पी 14) के वसूली ज्ञापन में भी उसके हस्ताक्षर हैं। वह पुलिस के अन्य दस्तावेजों को भी साबित करता है और आगे जांच के दौरान की गई बरामदगी को भी साबित करता है। उन्होंने एफ. आई. आर. दर्ज करने में देरी के बारे में समझाने की कोशिश की और उनके अनुसार, मर्ग रिपोर्ट दर्ज होने के बाद आपराधिक तंत्र को सक्रिय कर दिया गया था। वह.

बी.

सी.

उसने इस सुझाव का खंडन किया है कि वास्तव में प्रारंभिक विलय रिपोर्ट में अपीलार्थी का नाम नहीं था और बाद में ही उसका नाम जोड़ा गया था। वह आगे कहता है कि उसे कोई कारण नहीं मिला कि ऐसा करने का मकसद क्या था

अपराध। अन्य सभी सुझावों को उन्होंने अस्वीकार कर दिया है। 30. दंड प्रक्रिया संहिता 3 की धारा 313 के तहत जाँच में, अपीलार्थी के खिलाफ पूरा सबूत उसके सामने रखा गया था, जिसे उसने अस्वीकार कर दिया है। हालाँकि, उन्होंने कहा कि वे वन विभाग में चौकीदार के रूप में अपना कर्तव्य निभा रहे थे और व्यक्तिगत कारणों से

डी.

दुश्मनी उन्हें गलत तरीके से फंसाया गया था। वह यह भी कहता है कि वह चाहता है

ई.

वन क्षेत्र अधिकारी श्री सिन्हा और एक श्री राजेंद्र ठाकुर से पूछताछ करने के लिए। हालाँकि, बचाव पक्ष की ओर से कोई सबूत नहीं दिया गया।

31. विचार किए जाने वाला पहला सवाल यह है कि क्या किसी प्रत्यक्षदर्शी ने वास्तव में अपीलार्थी द्वारा मृतक पर हमला करने की घटना को देखा था। इसका जवाब 'नहीं' है।

एफ.

32. उपरोक्त निष्कर्ष के कारण निम्नलिखित हैं:

क) मुखबिर (पीडब्लू-1) के अनुसार, वह मृतक की मदद के लिए चिल्लाने की आवाज़ सुनकर अपनी पत्नी के साथ घटनास्थल पर पहुंचने वाला पहला व्यक्ति था कि शत्रुघ्न उस पर तबल से हमला कर रहा था। जब वह घटनास्थल पर पहुंचे तो उन्होंने देखा कि मृतक सड़क पर पड़ा हुआ था और अपीलार्थी तबल के साथ साइकिल पर अपने घर की ओर बढ़ रहा था। यह एफ. आई. आर. संस्करण है।

जी.

एच.

771

शत्रुघ्न बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

ख) अपने अभिसाक्ष्य में अभि. साक्षी 1 में कहा गया है कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचा तो उसने आरोपी को भागते हुए देखा और तबल वहाँ पड़ा हुआ था। मृतक बेहोश हो गया था और उसकी गर्दन पर गहरा घाव था और चोट से खून बह रहा था। उसके फोन पर, अन्य पड़ोसी और उसकी बेटी सभी अपने घरों से बाहर आ गए।

बी.

ग) पीडब्लू-14 जिन्होंने कहा है कि पीडब्लू-1 ने उन्हें केवल यह सूचित किया कि जगत (मृतक) पर हमला किया गया था और उन्हें अस्पताल ले जाया गया था। पीडब्लू-1 ने पीडब्लू-14 को सूचित नहीं किया कि यह अपीलार्थी था जिसने हमला किया था। पीडब्लू-14 में कहा गया है कि बाद में लखन और लक्ष्मण ने अपीलार्थी द्वारा मृतक पर हमला करने के बारे में सूचित किया। जिन अन्य चश्मदीद गवाहों की गवाही पहले ही ऊपर सुनाई जा चुकी है, उन्होंने यह नहीं कहा है कि उन्होंने अपीलार्थी को मृतक पर हमला करते देखा है।

सी.

घ) पीडब्लू-2 पीडब्लू-1 की पत्नी है, पीडब्लू-3 मृतक की विधवा है, पीडब्लू-4 पीडब्लू-1 की बेटी है, अन्य गवाह हैं जो घटना स्थल पर पहुंचे थे। उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा है कि उन्होंने अपीलार्थी को मृतक पर हमला करते देखा है।

डी.

ड) इस प्रकार, एकमात्र सबूत पीडब्लू-1 का है जिसमें कहा गया है कि जब अपीलार्थी वहाँ पहुँचा तो वह घटना स्थल से भाग रहा था। उन्होंने स्वयं कहा है कि मृतक पहले से ही बेहोश था क्योंकि वह बोलने की स्थिति में नहीं था।

ई.

च) एक और पहलू है जिस पर विचार किया जाना चाहिए कि क्या मृतक द्वारा दी गई पुकार को जैसा कहा गया है वैसा किया जा सकता था। आम तौर पर गाँवों में कोई भी बुजुर्ग और विशेष रूप से उनके चाचाओं का नाम नहीं लेता है। अभि. साक्षी 1 विजय कुमार मृतक के चाचा (पिता के भाई) हैं। सामान्य तौर पर मृतक ने केवल काका को फोन किया होगा और अपना नाम यह कहने के लिए नहीं लेगा कि 'काका विजय सिंह भाग रहा है, शत्रुघ्न मुझ पर तबल से हमला कर रहा है' ('

एफ.

जी.

काका विजय सिंह दौड़ो, मेरे

’').

छ) प्रथम सूचना रिपोर्ट में कहा गया है कि जब अभि. साक्षी 1 बाहर आया तो उसने शत्रुघ्न को तबल के साथ साइकिल पर अपने घर की ओर भागते देखा, लेकिन उसके सामने अभिसाक्ष्य में कहा गया है।

एच.

772

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

विचारण न्यायालय में यह कहा गया है कि जब वह घटना स्थल पर पहुंचा तो अपीलार्थी भाग रहा था और तबल वहाँ पड़ा हुआ था और फिर वह कहता है कि मृतक ने केवल चिल्लाया था कि अपीलार्थी उसके साथ दुर्व्यवहार कर रहा है।

ज) एक अन्य पहलू जिस पर विचार किया जाना चाहिए वह यह है कि क्या उक्त चोट लगने के बाद मृतक चिल्ला सकता था और अगर उसने हमला करने से पहले चिल्लाया होता तो स्थिति अलग होती। यह एक-से-एक होता और वह हमले का विरोध कर सकता था। तथ्य यह है कि गर्दन पर केवल एक चोट है।

बी.

33. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, अभियोजन पक्ष की कहानी एक संभावित कहानी प्रतीत नहीं होती है और तथ्य के गवाहों के मुकदमे के दौरान दिए गए सहायक साक्ष्य भी विश्वास को प्रेरित नहीं करते हैं। बल्कि भौतिक विरोधाभास हैं।

सी.

34. दूसरी ओर, बचाव पक्ष निम्नलिखित कारणों से अभियोजन पक्ष के मामले में गंभीर संध लगाने में सफल रहा है:

डी.

क) पहला बिंदु यह है कि अभियोजन पक्ष द्वारा कोई उद्देश्य स्थापित नहीं किया गया है कि अपीलार्थी मृतक पर हमला क्यों करेगा। तथ्य के सभी गवाह जो परिवार के सदस्य हैं, ने कहा है

कि अपीलार्थी और मृतक के बीच कोई दुश्मनी नहीं थी। एक बार जब घटना का कोई चश्मदीद गवाह नहीं होता है तो अभियोजन पक्ष को अपराध करने के लिए एक उद्देश्य स्थापित करना होगा क्योंकि प्रत्यक्ष साक्ष्य के मामले में, उद्देश्य की एक प्रमुख भूमिका नहीं हो सकती है। यदि कोई उद्देश्य सेटअप या सिद्ध नहीं है और प्रत्यक्ष चश्मदीद गवाह हैं, तो उद्देश्य का महत्व कम हो सकता है लेकिन वर्तमान मामले में जैसा कि किसी ने घटना को नहीं देखा है, उद्देश्य की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

ई.

एफ.

ख) जिरह के दौरान बचाव पक्ष ने पाया है कि सरपंच खेमराज ने अपीलार्थी के खिलाफ इस कारण शिकायत की थी कि अपीलार्थी ने सरकारी धन के दुरुपयोग और आवश्यक वस्तुओं के वितरण में बड़ी अवैधता के बारे में भी शिकायत की थी। उक्त शिकायत पर एक जांच की गई जिसमें सरपंच खेमराज अभि. साक्षी 11 को सार्वजनिक रूप से माफी मांगनी पड़ी।

जी.

ग) बचाव पक्ष ने यह भी सुझाव दिया है कि मृतक को अस्पताल ले जाने के बाद रात में ही एक बैठक बुलाई गई थी

एच.

773

शत्रुघन बनाम छत्तीसगढ़ राज्य [विक्रम नाथ, जे.] ए.

जहाँ अपीलार्थी को इकबालिया बयान देने के लिए मजबूर किया गया था। उक्त बैठक को पीडब्लू-5 द्वारा स्वीकार किया गया है। यह सुझाव दिया गया था कि बैठक में अपीलार्थी ने कहा था कि उसने मृतक को फिसलते हुए और नुकीली वस्तु पर गिरते हुए देखा था जिसके परिणामस्वरूप चोट लगी थी जो घातक साबित हुई थी। घ) यह संभव है कि सरपंच खेमराज के प्रभाव के कारण अपीलार्थी को गलत तरीके से फंसाया गया हो। ई) बचाव पक्ष ने अभि. साक्षी 6 की प्रतिपरीक्षा के दौरान यह भी पता लगाया था कि हमले के हथियार के आकार और चोट के आकार को देखते हुए हमले का हथियार बरामद किया गया था और उसके सामने पेश किया गया था, जो चोट का कारण नहीं हो सकता था।

बी.

सी.

च) बचाव पक्ष ने यह भी सुझाव दिया था कि वास्तव में मृतक बहुत नशे में था और एक तेज धार वाली वस्तु पर गिर गया था जिसके कारण उसे चोट लगी थी। यह दो कारणों से संभव

प्रतीत होता है:सबसे पहले, उस अभि. साक्षी 6 ने कहा था कि मृतक के शरीर में पर्याप्त शराब थी और दूसरा कि अभियोजन पक्ष द्वारा प्रस्तुत हमले का हथियार चोट से मेल नहीं खाता था। हो सकता है कि यह चोट मृतक के फिसलने और किसी नुकीली वस्तु पर गिरने से लगी हो।

डी.

ई.

35. साक्ष्य और विश्लेषण के उपरोक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि अभि. साक्षी 1 की गवाही विश्वसनीय नहीं थी और दोषसिद्धि का आधार नहीं बन सकती थी।जाहिरा तौर पर, वह सरपंच खेमराज से प्रभावित थे, जिनकी घटना के बाद की कार्यवाही में सक्रिय भागीदारी से इनकार नहीं किया जा सकता है।चिकित्सा साक्ष्य अभियोजन पक्ष के मामले का समर्थन नहीं करते थे क्योंकि हमले के हथियार से मृतक को चोट नहीं लग सकती थी जैसा कि पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में देखा गया है।इस बात का कोई उद्देश्य नहीं था कि अपीलार्थी बिना किसी कारण के किसी परिचित और मित्र की हत्या क्यों करेगा।बचाव पक्ष का कहना है कि मृतक शराब के प्रभाव में था और वह किसी नुकीली वस्तु पर गिर सकता था जिसके परिणामस्वरूप पोस्टमॉर्टम में पूर्व-पोस्टमार्टम चोट की सूचना दी गई थी।रिकॉर्ड से भी यही बात स्पष्ट रूप से सामने आती है।एफ. आई. आर. दर्ज करने में देरी के लिए स्पष्टीकरण संतोषजनक नहीं है।

एफ.

जी.

36. उपरोक्त चर्चा को देखते हुए, अभियोजन पक्ष आरोप स्थापित करने में विफल रहा था।

एच.

774

सर्वोच्च न्यायालय की रिपोर्ट

[2023] 10 एस सी आर।

37. ऊपर बताए गए सभी कारणों के लिए, अपीलार्थी बरी होने का हकदार होगा।तदनुसार अपील की अनुमति दी जाती है।अपीलार्थी की दोषसिद्धि और सजा अपास्त करना कर दिया जाता है।वह सभी आरोपों से बरी हो जाता है।अपीलार्थी हिरासत में है।यदि वह किसी अन्य मामले में वांछित नहीं है तो उसे तुरंत रिहा कर दिया जाएगा।

38. लंबित आवेदनों का निपटारा किया जाता है।

बी.

निधि जैन

अपील की अनुमति दी गई।

(सहायक: तमन्ना, एलसीआरए)

सी.

डी.

ई.

एफ.

जी.

एच.